IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी बाल कविता का उत्तर स्वतंत्रता युग

(1948 से 1990 तक)

डॉ. तृप्ति उकास
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
शासकीय महाकोशल कला एवं वाणिज्य
स्वशासी महाविद्यालय, जबलपुर, म.प्र.

सारांश

एक अच्छा सामाजिक–साहित्यिक परिवेश बच्चों में मूल्य चेतना की प्रेरणा जागृत करने में सहायक होता है। बाल काव्य लिखने वाले कवि–कवयित्री सदैव उच्च गुणवत्तायुक्त विषय सामग्री एवं प्रकृति का आधार ग्रहण कर बच्चों में भावी उत्तम नागरिकों के मूल्यों का पोषण करते हैं। बाल कविताओं का प्राथमिक उद्देश्य बच्चों को ऐसा परिवेश प्रदान करना है, जो उन्हें सामाजिक–मानवीय मूल्यों का ज्ञान सरल–सहज एवं व्यवहारिक शब्दावली के माध्यम से दे सके। बालक–बालिकाओं में उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों यथा त्याग, सत्य, निष्ठा, समर्पण, परमार्थ, सामाजिक समझ इत्यादि भावों को विकसित करना बाल काव्य के उद्देश्य हैं।

बाल कविता लिखने वाले साहित्यकार प्रायः अपनी रचनाओं के माध्यम से बच्चों के मन की बातें कहते हैं। साथ ही आस–पास के परिवेश से जुड़ी बातों का, जानकारियों को लघु कलेवर की कविताओं में व्यक्त करते हैं। यह लघु कलेवर की कविताएँ बाल मन पर स्थायी प्रभाव छोड़ जाती हैं। जीवन पर्यन्त हम सभी बाल अवस्था में पढ़ी हुई कविताओं को यथा चल रे मटके टम्मक टू, चींटी होती सबसे छोटी ख़ुद से बड़ा वज़न ये ढोती, इब्नबतूता पहन के जूता निकल पड़े तूफ़ान में, बीती विभावरी जाग री, अक्कड़–बक्कड़ लाल बुझक्कड़ आदि अनगिनत कविताओं को आजीवन स्मृति पटल पर अंकित पाते हैं।

मुख्य शब्द – विषय प्रवेश, बाल साहित्य के प्रारम्भिक सूत्र, हिन्दी बाल साहित्य का विभाजन, स्वतंत्र्योत्तर भारत में बाल कविता का विकास, उपसंहार।

प्राचीन काल से ही भारत वर्ष में पंचतंत्र, हितोपदेश, वृहत्कथा, गुणाढ्य कथा तथा कथा सरित्सागर आदि के रूप में बाल साहित्य की एक अति समृद्ध परम्परा रही है। इसके साथ ही लोक कथाओं में एवं दन्त कथाओं में भी बाल साहित्य का प्रचुर भण्डार है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से भी हस्तांरित होता चला आ रहा ह। इसी क्रम में विक्रम वेताल की कथा, बीरबल, तेनालीराम, हातिमताई, लाल बुझक्कड़ की कथा आदि ग्रामीण अंचलों से ले कर शहरों तक बच्चों को कण्ठस्थ हैं और आये दिन एक–दूसरे से कही–सुनी जाती हैं। डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने बाल काव्य का मूल स्रोत लोक साहित्य को माना है। लोक परम्पराएँ, लोक विश्वास एवं लोक में प्रचलित उत्सव आदि अत्यधिक प्रेरक और आकर्षक होते हैं। इन को

आधार बना कर लिखी गयी कोमलकान्त रचनाएँ बाल साहित्य का रूप ग्रहण कर लेतीं हैं। सहज लोक विश्वासों से अनुप्राणित सरल–सरस रचनाएँ बच्चों को प्रेरणा प्रदान करती हैं। डॉ. देवसरे के अनुसार, ''लोकजीवन में व्याप्त विश्वासों, परम्पराओं तथा अनुभवों ने जिन कहानियों एवं गीतों को जन्म दिया, वे सभी वर्गों को उनकी रुचियों और आयु के अनुसार मनोरंजन और ज्ञान देते रहे हैं। वे विश्वास, परम्पराएँ तथा अनुभव जब भी बदले, वहाँ नयी रचना को जन्म मिला। इस तरह कहानियों और गीतों का एक बहुत बड़ा भण्डार तैयार होता रहा।''[1]

हिन्दी बाल साहित्य का कुछ विद्वानों द्वारा मोटे तौर पर तीन खण्डों में विभक्त किया गया है। प्रारम्भिक काल, मध्यकाल, आधुनिक काल। प्रारम्भिक काल की समय सीमा 1900 से 1950 तक मानी है, मध्यकाल की समय सीमा 1950 से 2000 तक तथा आधुनिक काल की समय सीमा 2000 से अब तक स्वीकार की गयी है। डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने हिन्दी बाल साहित्य को पूर्व भारतेन्दु युग, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, स्वातंत्र्योत्तर युग तथा वर्तमान युग जैसे शीर्षकों में वर्गीकृत किया है। डॉ. परशुराम शुक्ल इस विभाजन को त्रुटिपूर्ण बताते हुए लिखते हैं– ''इस युग विभाजन में आधुनिक युग और वर्तमान युग जैसे युग हैं जो कभी शाश्वत नहीं होते। आधुनिक और वर्तमान दोनों ही लगभग एक जैसे नाम हैं तथा दोनों ही निश्चित रूप से भविष्य में परिवर्तित हो जायेंगे।''[2]

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे हिन्दी बाल साहित्य को विभाजित करते हुए वर्तमान युग को सन् 1957 से सन् 1967 तक स्वीकार करते हैं। उनके इस ग्रन्थ का प्रकाशन वर्ष 1969 है। वर्तमान युग के स्थान पर समकालीन शब्द निरन्तरता के साथ यथोचित होता क्योंकि यह आगे बढ़ता रहेगा। डॉ. परशुराम शुक्ल हिन्दी बाल साहित्य को इस प्रकार वर्गीकृत करते हैं, '' आदियुग (..... से 1850 तक), भारतेन्दु युग (1850 से 1900 तक), पूर्व स्वतंत्रता युग (1901 से 1947 तक), उत्तर स्वतंत्रता युग (1948 से 1990 तक) तथा प्रयोगवादी युग (1990 से निरन्तर)।

भारतेन्दु युग से ही बाल काव्य में मौलिक लेखन प्रारम्भ हुआ है। इसके पूर्व का साहित्य संस्कृत साहित्य की रचनाओं का अनुवाद, लोक प्रचलित गाथाओं का पुनर्कथन ही था। डॉ. हरिकृष्ण देवसरे इस सम्बन्ध में लिखते हैं, ''उन्होंने इसी सामाजिक चेतना का एक महत्त्वपूर्ण पहलू बालक–बालिकाओं में नवजागरण माना था और इसी उद्देश्य से 'बालबोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन 1 जून 1874 से प्रारम्भ किया था। यद्यपि यह पत्रिका अधिक समय तक नहीं निकली, तथापि इसने हिन्दी में बाल साहित्य रचना को जन्म दिया। यहीं से विशुद्ध हिन्दी बाल साहित्य का विकास प्रारम्भ होता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अनेक ऐसी रचनाएँ लिखीं जिन्होंने तद्युगीन बाल तथा किशोर पीढ़ी को प्रभावित किया और उनके मन पर अपने उद्देश्यों की अमिट छाप छोड़ी।''[3]

हिन्दी बाल साहित्य के क्षेत्र में मौलिक, सम–सामयिक एवं सोद्देश्य लेखन का व्यवस्थित आरम्भ 20 वी शताब्दी के दूसरे दशक से देखने मिलता है। इस समय 'विद्यार्थी', 'शिशु' एवं 'बालसखा' पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। सन् 1917 से 'बालसखा' निरन्तर 53 वर्षों तक श्री लल्ली प्रसाद पाण्डे के सम्पादन में प्रकाशित होती रही। इनके पश्चात् 'वानर', 'कुमार' तथा 'मनमोहन' आदि बाल पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हुईं। इन पत्रिकाओं ने अनेक समर्थ, मूल्यवान बाल साहित्यकार दिये एवं बाल साहित्य के आधार स्तम्भ का कार्य किया। मैथिलीशरण गुप्त, कामताप्रसाद गुरु, रामनरेश त्रिपाठी, बाबू गुलाबराय, सुभद्राकुमारी चौहान, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' आदि स्वनाम धन्य साहित्यकारों ने भी इन पत्रिकाओं के लिये रचनाएँ लिखीं। चूँकि यह समय सामाजिक जन जागरण तथा स्वतंत्रता आंदोलन का समय था। अतः उस समय

सृजित बाल साहित्य में स्वाभाविक रूप से आदर्शपरक, नीतिपरक तथा देश प्रेम की भावनाओं से ओतप्रोत रचनाओं की अधिकता रही।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी साहित्य की समस्त विधाओं सहित बाल साहित्य में महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। ''पूर्व स्वतंत्रता युग में जो कुछ भी बाल साहित्य लिखा गया, वह पूरी तरह परम्परावादी, धार्मिक अथवा नैतिक सीमाओं में बंधा हुआ था। भारत की स्वतंत्रता के बाद हिन्दी बाल साहित्य की सीमाएँ टूटी तथा इसमें नये विषयों और विचार धाराओं का समावेश हुआ। इस युग के पूर्वार्द्ध में नेहरु, गाँधी, सुभाष, भगत सिंह आदि नेताओं और क्रान्तिकारियों पर प्रचुर मात्रा में साहित्य लिखा गया। इसके साथ ही स्वतंत्रता का महत्त्व, कर्त्तव्य परायणता, मानवता का महत्त्व, पर्वों एवं त्योहारों का महत्त्व तथा पशु–पक्षियों और प्रकृति का महत्त्व दर्शाने वाला बाल साहित्य भी लिखा गया।''[4] स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् बाल साहित्य के सृजनकर्ता कवियों में, इकबाल बहादुर देवसरे, नर्मदा प्रसाद खरे, रामधारी सिंह 'दिनकर', निरंकार देवसेवक, रामकृष्ण शर्मा खद्दर, चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक', चिरंजीत, राष्ट्रबन्धु, योगेश कुमार लल्ला, विनोद चन्द्र पाण्डेय, श्री प्रसाद, रामवचन सिंह 'आनन्द', जयप्रकाश भारती, रोहिताश्व अस्थाना, शोभनाथ लाल, शंकुनतला सिरोठिया के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

बाल गीतों, कविताओं के सम्बन्ध में यह महत्त्वपूर्ण है, कि ''बच्चों का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन होता है और जानवरों, पक्षियों तथा प्रकृति से उन का लगाव अधिक रहता है। इसी बात को ध्यान में रख कर उन के लिये गये अधिकांश गीत इसी प्रकार के हैं। प्रायः यह देखने में आया है, कि बच्चे अन्य विधाओं की अपेक्षा गीत अधिक पसन्द करते हैं, वे उन्हें गुनगुनाते कण्ठस्थ भी कर लेते हैं।....''[5] इस लिये बाल साहित्य में गीतों, कविताओं की रचना अधिक हुआ है।

स्वतंत्र्योत्तर काल के रचनाकारों में से एक नर्मदा प्रसाद खरे ने बाल मन के सूक्ष्म मनाभावों को अभिव्यक्ति प्रदान की।

''रंग–बिरंगे पंख तुम्हारे, सबके मन को भाते हैं।
कलियाँ देख तुम्हें ख़ुश होती, फूल देख मुस्काते हैं।
रंग–बिरंगे पंख तुम्हारे, सबका मन ललचाते हैं।
तितली रानी तितली रानी, यह कह कर सभी बुलाते हैं।
पास क्यों नहीं आती तितली, दूर–दूर क्यों रहती हो।
फूल–फूल के कानों में, जा जा कर क्या कहती हो।
सुन्दर–सुन्दर प्यारी तितली, आँखों को तुम भाती हो।...''[6]

प्रकृतिपरक यह सरल रचनाएँ बच्चों को सहज ही कण्ठस्थ हो जाती हैं। निरंकार देव सेवक के देशभक्तिपरक बाल गीतों ने अपनी अलग पहचान बनायी है। अपने बाल गीतों के माध्यम से उन्होंने नये भारत के निर्माण के लिये बालक–बालिकाओं को नूतन सन्देश दिये हैं। शिशु अवस्था से ले कर किशोर वय तक की मानसिक प्रवृत्तियों का पोषण करने वाले काव्य का सृजन किया।

"भारत देश हमारा है,
हमें प्राण से प्यारा है।
हम इस पर बलि जायेंगे।
जीवन पुष्प चढ़ायेंगे।
यह सुन कर मुन्ना बोला।
अज्ञानी बालक भोला।
देश किसे कहते हैं माँ।
हम जिसमें रहते हैं माँ।
पर यह तो अपना घर है
या फिर यह दुनिया भर है।..."[7]

पं. कृष्ण चन्द्र तिवारी 'राष्ट्र बन्धु' सुप्रसिद्ध बाल कवि हैं। सहारनपुर (उ.प्र.) में सन् 1933 में जन्मे 'राष्ट्र बन्धु' की कविताएँ, अपने नाम के अनुकूल ही बाल मन को स्वदेश प्रेम से भरने वाली हैं। नये कॉपी, किताब मिलने पर होने वाली बाल सुलभ प्रसन्नता भी उनके काव्य का वैभव है।

"नयी डायरी मुझे मिली है।
इसमें अपना नाम लिखूँगा।
जो करने के काम लिखूँगा।
किसने मारा किसने डाँटा।
बदनामों के नाम गिनूँगा।
ख़ुशियों की एक कली खिली।
नयी डायरी मुझे मिली है।..."[8]

श्री प्रसाद जी की कविताओं का मूल उद्देश्य बाल मनोरंजन करना है। वे अपनी बात को खेल–खेल में, बिना भाषायी आडम्बर के रखने के पक्षधर थे। आगरा (उ.प्र.) के ग्राम पारना में सन् 1932 में जन्में श्री प्रसाद जी के अनगिनत बाल काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं। बाल सुलभ जिज्ञासा और औतसुक्य इनकी काव्य की पूँजी है।

"रसगुल्लों की खेती होती।
चीनी सारी रेती होती।
बाग लगे चमचम के होते।
शरबत के बहते सब सोते।
बड़ा मज़ा आता।
चारगाह हलुए का होतां
हर पर्वत बर्फ़ी होता।
बड़ा मज़ा आता।
लड्डू की सब खानें होतीं।
घर में दुनिया पेड़े बोती।
बड़ा मज़ा आता।

मिलती रुपये किलो मिठाई।
रुपये होत पास अढ़ाई।
बड़ा मज़ा आता।....''[9]

10 अगस्त सन् 1955 को बलरामपुर ज़िला गोण्डा (उ.प्र.) में जन्में श्री रमेश चन्द्र बलरामपुर ने शताधिक बाल कविताओं की रचना की। 'चिड़िया आओ' तथा 'नानीजी' इनके प्रसिद्ध बाल काव्य संग्रह हैं। ग्रामीण परिवेश का वर्णन इन्होंने सफ़लतापूर्वक किया है।

''अमराई की सघन छाँव में।
बैठ मज़े से खेलेंगे हम।
पके आम खायेंगे जी भर।
हिला टहनियाँ पेड़ों की हम।
आता ख़ूब मज़ा है हम को।
नानीजी के गाँव में।....''[10]

वे बच्चों को केवल पुस्तकों तक एवं पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रखना चाहते हैं। व्यावहारिक दुनिया के दर्शन भी बालक–बालिकाओं के समग्र विकास में अनिवार्य हैं। वे बाल अवस्था में सिद्धान्त और व्यवहार दोनों के समन्वय पर बल देते हैं, जिससे श्रेष्ठ नागरिक, कुशल प्रशासक, उच्च मानवीय गुणों से युक्त मनुष्यों की प्राप्ति हो सके।

''सुबह शाम बस पढ़ना–पढ़ना।
कोई अच्छी बात नहीं है।
घर से कभी निकल कर बाहर।
धमा चौकड़ी खेल करो तो।
दुःख से यदि कोई पीड़ित।
हँस–हँस कर दो बात करो तो।
अपने तक ही सीमित रहना।
अच्छी बात नहीं है।...''[11]

डॉ. परशुराम शुक्ल एक श्रेष्ठ बाल काव्य सृजनकर्ता हैं। इनका जन्म कानपुर उ.प्र. के गाँव में 6 जून 1947 को हुआ। बाल काव्य के क्षेत्र में लगभग 200 पुस्तकें इन्होंने गद्य और पद्य में लिखी हैं। बाल मनोविज्ञान के गहन चिन्तन–मनन के उपरान्त लिखीं इनकी रचनाएँ, बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं।

''राजकीय पशु लक्षदीप की, मैं हूँ तितली रानी।
सभी राज्य पशुओं से मेरी, बिलकुल अलग कहानी।
मैं पानी के भीतर अपना, सीमा क्षेत्र बनाती।
इसमें यदि कोई आ जाये, लड़ कर उसे भगाती।..''[12]

इस प्रकार की कविताएँ खेल–खेल में बच्चों को सामान्य ज्ञान से भी परिचित कराती हैं। इसी शृंखला में डॉ. अजय जनमेजय, रोहिताश्व अस्थाना, चक्रधर नलिन, विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद', गौरी शंकर उपाध्याय 'सरल', डॉ. जयराम आनन्द, अवध किशोर सक्सेना, सीताराम गुप्त 'दिनेश' के नाम भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। वीर रस से परिपूर्ण कविताओं के सर्वप्रमुख कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने बालक–बालिकाओं के लिये भी प्रेरक कविताएँ लिखीं हैं। 'चन्दामामा उनकी प्रसिद्ध बाल कविता है।

''एक बार की बात चन्द्रमा बोला अपनी माँ से,
कुर्ता एक नाप का मेरी माँ मुझ को सिलवा दे।
नंगे तन बारहों मास मैं यों ही घूमा करता।
गर्मी, वर्षा, जाड़ा हरदम बड़े कष्ट सहता।
माँ हँस कर बोलीं सिर पर रख कर हाथ चूम कर मुखड़ा।
बेटा ख़ूब समझती हूँ मैं सारा तेरा दुखड़ा।
लेकिन तू तो एक नाप में कभी नहीं रहता है।
पूरा कभी, कभी आधा बिलकुल कभी न दिखता है।
आहा! माँ फिर तो हर दिन की मेरी नाप लिवा दे।
एक नहीं पूरे पन्द्रह तू कुरते मुझे सिलवा दे।...''[13]

बाल साहित्य के संसार में महिला साहित्यकारों का भी योगदान उल्लेखनीय है। मातृत्व भाव से विभूषित मानस वाली इन विदुषियों ने बाल मनोवृत्ति के स्वाभाविक ज्ञान के मर्म को बहुत कुशलता के साथ अपनी लेखनी से उकेरा है। यहाँ श्रीमती तारा पाण्डेय, श्रीमती गोपाल देवी, सुभद्रा कुमारी चौहान, विद्यावती कोकिल, श्रीमती शान्ति अग्रवाल, सुश्री शकुनतला मिश्र, सुश्री शकुनतला सिरोठिया, शान्ति मेहरोत्रा, विभा देवसरे, स्नेह अग्रवाल, सावित्री देवी शर्मा, मोहिनी राव, उषा यादव, क्षमा शर्मा, विमला रस्तोगी, उषा महाजन, सुरेखा पाणन्दीकर, सरोजनी कुलश्रेष्ठ, बानो सरताज काज़ी के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। श्रीमती गोपाल देवी ने 'शिशु' पत्रिका का सम्पादन कार्य भी किया तथा श्रीमती तारा पाण्डय ने 'बालसखा' पत्रिका के लिये अनेक बाल गीत लिखे। वीर रस की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने बाल साहित्य के क्षेत्र में प्रेरक रचनाओं का सृजन किया है।

''यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे।
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे–धीरे।
ले देती यदि मुझे बांसुरी तुम दो पैसे वाली।
किसी तरह नीची हो जाती यह कदम्ब की डाली।
तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं चुपके–चुपके आता।
उस नीची डाली से अम्मा ऊँचे पर चढ़ जाता।
वहीं बैठ फिर बड़े मज़े से मैं बांसुरी बजाता।
अम्मा–अम्मा कह बंसी के स्वर में तुम्हें बुलाता।
बहुत बुलाने पर भी माँ जब मैं न उतर कर आता।
माँ तब माँ का हृदय तुम्हारा बहुत विकल हो जाता।
तुम आँचल फैला कर अम्मा वहीं पेड़ के नीचे।

ईश्वर से कुछ विनती करतीं बैठी आँखें मींचे।
तुम्हें ध्यान में लगी देख मैं धीरे–धीरे आता।
और तुम्हारे फैले आँचल के नीचे छुप जाता।
तुम घबरा कर आँख खोलतीं पर माँ ख़ुश हो जातीं।
जब अपने मुन्ना राजा को गोदी में ही पातीं।...''[14]

बाल कविता के सन् 1947 से सन् 1970 तक के इस विकास युग को लेखक प्रकाश मनु ने 'गौरव युग' की संज्ञा दी है, ''इस युग को 'गौरव युग' कहने का अर्थ है, कि इस दौर में बाल कविता में जितनी अर्जित, काव्य क्षमतापूर्ण, सम्भावनापूर्ण और नये युग की चेतना से लैस प्रतिभाएँ मौजूद थीं, वे न इससे पहले थीं और न बाद में ही नज़र आती हैं।''[15] इस युग में सोहनलाल द्विवेदी, निरंकार देव सेवक, चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक' एवं द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी बाल काव्य के चार आधार स्तम्भ थे। 1950 से 2000 तक के मध्यकाल में हिंदी बाल साहित्य के विकास ने गति पकड़ ली। इस समय के रचनाकारों ने समृद्ध बाल साहित्य की आवश्यकता एवं उपादेयता को महसूस किया तथा इसकी समृद्धि तथा विकास के लिये प्राणप्रण से जुट गये। ठाकुर श्रीनाथ सिंह, लल्ली प्रसाद पांडे, श्रीधर पाठक, निरंकार देव सेवक, विष्णुकांत पांडे, द्वारका प्रसाद माहेश्वरी, सोहनलाल द्विवेदी आदि ऐसे ही रचनाकार थे, जिन्होंने अपना सारा ध्यान सारी ऊर्जा तथा सारी प्रतिभा मात्र बाल साहित्य के विकास के लिये ही समर्पित कर दी।

पिछले लगभग तीन दशक का समय विज्ञान, तकनीक, संचार और सूचना के क्षेत्र में क्रांति का समय रहा है। विज्ञान और टेक्नालांजी न न सिफ हमारे सामाजिक और पारिवारिक बल्कि वैयक्तिक जीवन में भी काफो गहरा हस्तक्षेप किया है। आज का बच्चा होश संभालते ही टी. वी., कम्प्यूटर, ए.सी., फ्रिज और मोबाइल जैसे उपकरणों से साक्षात्कार करता है। अतः उसे परी, अप्सरा, भूत–प्रेत और दैवीय चमत्कार सरीखी काल्पनिक बातों से नहीं बहलाया जा सकता। हिन्दी के बाल साहित्यकार इस तथ्य को बखूबी समझते हैं और यही कारण है कि हिन्दी में आज वैज्ञानिक दृष्टि सम्पन्न साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। शुकदेव प्रसाद, जयंत विष्णु नार्लीकर, विजयकुमार उपाध्याय, गुणाकर मुले तथा लल्लन कुमार प्रसाद जैसे रचनाकारों ने विविध विधाओं में विपुल मात्रा में मौलिक, रोचक तथा उपयोगी विज्ञान बाल साहित्य की रचना की है। इनके अतिरिक्त संजीव जायसवाल 'संजय', अरविंद मिश्र तथा जाकिर अली 'रजनीश' ने भी वैज्ञानिक विषयों को लेकर कविताओं, कहानियों, उपन्यासों तथा वैज्ञानिक लेखों आदि की रचना की है।

आज कम से कम डेढ़ दर्जन बाल पत्रिकाएँ यथा सुमन सौरभ, चम्पक, लोटपोट, बाल भारती, बाल हांस, बाल भास्कर, नन्हें सम्राट, नंदन, हंसती दुनिया, स्नेह, बाल वाटिका, बाल वाणी, देवपुत्र, बच्चों का देश, बाल प्रहरी आदि ऐसी हैं जो नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। आज हिन्दी का कोई भी ऐसा दैनिक या साप्ताहिक पत्र नहीं हैं, जिसमें बाल साहित्य को प्रमुखता से स्थान न मिलता हो। हिन्दी की कई प्रतिष्ठित मासिक पत्रिकाओं में भी बाल साहित्य के लिये स्थान आरक्षित रहता है। कई स्थापित पत्रिकाओं ने समय–समय पर बाल साहित्य पर विशेषांक भी निकाले हैं। ये सारी बातें स्वयमेव बाल साहित्य की समृद्धि और सामथ्य की द्योतक हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 69
2. शुक्ल डॉ. परशुराम (2016) हिन्दी बाल साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, पृ. 09
3. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 118
4. शुक्ल डॉ. परशुराम (2016) हिन्दी बाल साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, पृ. 16
5. सक्सेना अवध किशोर 2006, भारत नन्दन के परिजात, सरस्वती विहार प्रकाशन, दतिया, पृ. 4
6. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 199
7. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 200
8. सिंह डॉ. शिरोमणि 'पथ'(2013), बालकविता में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना, आशा प्रकाशन, कानपुर, पृ. 96
9. सिंह डॉ. शिरोमणि 'पथ'(2013), बालकविता में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना, आशा प्रकाशन, कानपुर, पृ. 97–98
10. सिंह डॉ. शिरोमणि 'पथ'(2013), बालकविता में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना, आशा प्रकाशन, कानपुर, पृ. 96
11. सिंह डॉ. शिरोमणि 'पथ'(2013), बालकविता में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना, आशा प्रकाशन, कानपुर, पृ. 106
12. शर्मा ले. राजेन्द्र कुमार (2013), समकालीन हिन्दी बाल कविता, फाल्गुनी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 82
13. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 207
14. देवसरे डॉ. हरिकृष्ण (1969) हिन्दी का बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 214
15. सिंह डॉ. कामना (2005) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी बाल साहित्य, आलेख प्रकाशन, वी–8 नवीन शाहदरा, दिल्ली – 110032, पृ. 45
16. https://www.wikiwand.com/hi/हिन्दी_पत्रिकाओं_की_सूची